

भूमिका ।

हृद्बोधितश्चेतकपारदायै

महागमाम्भोनिधिपारदायै ।

बुद्धिप्रदानेकविशारदायै

कुर्वे नमः प्राञ्जलि शारदायै ॥ १ ॥

धन्य है उस परब्रह्म परमात्माको जिसके परिपूर्ण कृपा-
कटाक्षसे हमको वह मृगवसर प्राप्त हुआ कि जिस में चतुर्विध
श्रीसंघ-समुदायने बड़े आग्रह के साथ सुयोग्य मुनिराजश्रीभ्रा-
तृचन्द्र-सूरिजीको प्राचीन रीति के अनुसार सूरिपद प्रदान की
चेष्टा की । उस अपनी चेष्टा को परिपूर्ण करनेके लिये सब जैन-
महाशयोंकी मुलभता विचारकर गुजरात और मारवाड़ के मध्य-
वर्ती श्रीशिरोहीराज्यान्तर्गत श्रीशिवगञ्जनगरमें महोत्सव किया,
उस महोत्सव पर मैं भी श्रीसंघसमुदायसे साग्रह आमन्त्रित किया
गया, शिवगंज में उक्त सूरिभरजी की सेवामें पहुँचा । उस समय
सूरिभरजीमहाराज के अपूर्व गुणोंको, और आए हुए सब महा-
शयोंकी परिपूर्ण भक्ति और परमोत्साह देखकर यह प्रशस्ति मैंने
बनाई है आशा है कि सब महाशय पञ्चपातको छोड़कर इस पर
कृपादृष्टिका प्रसारकर मेरे श्रमको सफल करेंगे ।

यदि किसी महाशय को इसमें शङ्कास्पद विषय प्राप्त होवेतो
मेरे से निम्न लिखित पत्र पर परव्यवहार कर सकेंगे । इतिशम्.

उये. कृ. १३ सं. १०६८

चौदवावदी,

जोधपुर.

इति निवेदयानि विद्वदनुचरः

पं. नित्यानन्दशर्मा

वाशकविः

॥ ॐ नमः सिद्धम् ॥

आद्य तीर्थ पासे शीवगंज नगरे.

॥ श्लोक. ॥

तीर्थं धीराजिनेश्वरस्य विदिते श्री कोटीकार्येगणे ॥

श्रीमद्वन्द्यकुले यदोक्तवृहद्गच्छे परिम्लायिते ॥

श्रीमन्नागपुरीयकाद्वयनपा प्राप्तावदातेधुना ॥

स्फूर्जद्विनिगान्विता गणधरश्रेणी सदा राजते ॥१॥

आचार्यश्री संविम पक्षीय मुनिमहाराज श्री १००८

श्री भ्रातृचंद्र सूरेश्वर विजय राज्ये.

ॐ

धीसाधी

धीसाधुसाधी

धाधाधुधुसाधी

धीसाधुधुधुसाधी

धीसाधुधुधुधुसाधी

धीसाधुधुधुधुधुसाधी

धीसाधुधुधुधुधुधुसाधी

धीसाधुधुधुधुधुधुधुसाधी

धीसाधुधुधुधुधुधुधुधुसाधी

जन्म संवत् १०००.

दाता संवत् १०३५.

क्रिया उद्धार संवत् १०३७.

सुरेश्वर संवत् १०६७ना

वशात्तु १३.

अथ श्री पार्श्वचंद्र सूरेश्वर महाराजनो

संवत् १६१२ मां स्वर्गवास. तत्पट्टेयी पञ्चवल्किा विजयने.

॥ पाणिनी छंद ॥

विदिन सकलशास्त्रान् पार्श्वचंद्रान् कवींद्रान् ॥

भजन समरचंद्रान् मन्त्रराजीव मूर्त्यान् ॥

नयन विशदमूर्त्तान् राजचंद्रान्मूर्त्तींद्रान् ॥

विमल विमल चंद्रान् नौमि मूर्त्तिद्रमुत्पान् ॥ १ ॥

॥ गार्हपत्यिकीदिन छंद ॥

पूज्याश्रीनयचंद्रमूर्त्तिमुनिपा, जाना जगद्विभुता ।

स्तनपट्टोदयभाष्करा गणिवराः श्रीपद्मचंद्रा वभूः ॥

तत्पट्टे मुनिचंद्रमूर्त्ति गणिनो, नंदन् भट्टाङ्का ।

स्तनपट्टाब्जविभाकरा गणिवरा श्रीनेमिचंद्रादयाः ॥ २ ॥

तत्पट्टे कनकेंद्रमूर्त्ति गणपा, जाना जगत्पुञ्जला ।

स्तनपट्टे शिवचंद्रमूर्त्ति मुनिपा, विष्णुपातकीर्ति व्रजाः ॥

तत्पट्टे विमलप्रबोधमहिताः श्री भानुचंद्राभिषा ।

स्तनपट्टे च विवेकचंद्रयनिपा जाना जगत्पूजिताः ॥ ३ ॥

॥ वामननिरुद्ध छंद ॥

तत्पट्टे मानस गंगाया गजदंभाः

श्री लज्जिचंद्र मुनिपाः प्रपञ्चवृक्षम्

तत्पट्टभाष्कर निषा विष्णुमद्गुणौघाः

श्री हर्षचंद्रमुनिपुत्रवरा जयन्तु ॥ ४ ॥

॥ तत्पट्टे श्री हर्षचंद्र मुनेश्वरः

तत्पट्टे न । प । म । व ।

॥ आचार्य श्रीमान भानुचंद्र मृगीश्वर विजयनेनगम् ॥ ५ ॥

अथ श्री पार्श्वचंद्र सूरेश्वर महाराजनो

संवत् १६१० मां स्वर्णवाम. तत्पट्टेयी फ्यावजिहा लिख्यते.

॥ माञ्जिनी छंद ॥

विदित सकलजगत्पान् पार्श्वचंद्रान् कवींद्रान् ॥

भजन समरचंद्रान् मय्यराजीव मूर्यान् ॥

नमन विशदमूर्तीन् राजचंद्रान्मुनींद्रान् ॥

विमल विमल चंद्रान् नौमि मूर्तिद्रमुल्यान् ॥ १ ॥

॥ शार्दूलविक्रीडित छंद ॥

पूज्याश्रीजयचंद्रमुरिमुनिपा, जाता जगद्विभुता ।

स्तत्पट्टोदयभास्करा गणिवराः श्रीपद्मचंद्रा बभूवुः ॥

तत्पट्टे मुनिचंद्रमुरि गणिनो, नंदंतु भट्टारका ।

स्तत्पट्टाब्जविभाकरा गणिवरा श्री नेमिचंद्रादयाः ॥ २ ॥

तत्पट्टे कनकेंदुमुरि गणपा, जाता जगत्पुज्यन्ता ।

स्तत्पट्टे शिवचंद्रमुरि मुनिपा, विख्यातकीर्तिं व्रजाः ॥

तत्पट्टे विमलप्रबोधसहिताः श्री भानुचंद्राभिधा ।

स्तत्पट्टे च विवेकचंद्रपतिपा जाता जगत्पूजिताः ॥ ३ ॥

॥ वसंततिलका छंद ॥

तत्पट्टे मानस सरोवर राजहंसाः

श्री लब्धचंद्र मुनिपाः मयभूवुरेवम्

तत्पट्टभास्कर निभा विलसद्गुणौघाः

श्री हर्षचंद्रमुनिवृन्दवरा जयंतु ॥ ४ ॥

॥ तत्पट्टे श्री हमेचंद्र सूरेश्वरः

तत्पट्टे जं । यु । म । म ।

॥ आचार्य श्रीमान् भ्रातृचंद्र सूरेश्वर विजयतेतराम् ॥



જેનશાસનપ્રભાવક ધર્મમૂલવ્યવહારશુદ્ધિધારક મા-
 ગાનુસારી ગુણગ્રાહક, જિનાજ્ઞામુકુટધારક સકલ
 શ્રી સંઘજેન હર્દીશીંગ શરસ્વતી સભા શામલાની
 પોલ્લ ચાલગોપાલપ્રતિ વિદિત કરવામાં આવે છે
 કે શ્રીમન્નાગપુરીય વૃહત્તપાગચ્છાધિરાજ શ્રીપાર્શ્વ-
 ચંદ્રસૂરિ સંતાનીય સુશીલાદિ ગુણસંપન્ન જગન્ પ્ર-
 સિદ્ધ જગન્દેશ્વર ગુરુ શ્રી ૧૦૦૮ જંગમ જુગ પ્રધાન
 મહારકોત્તમમહારક શ્રી હેમચન્દ્રસૂરિ શ્રીમુર્તિ
 અત્યન્ત આગ્રહ પૂર્વક શ્રી સંઘપ્રતિ જનાવ્યું કે જે-
 નશાસન ઉન્નતિકારક સન્માર્ગોપદેશક તેમજ મી-
 તાર્થ અને વયસંપન્ન ધાર વાર શમશીલ સંવેગાદિ-
 ગુણગણ શોભિત સુવિહિત શિરોમણી ધર્મનુધર,
 મુનિરાજ શ્રી ૧૦૦૮ આર્યભાનુચંદ્રજી મહારાજની
 યોગ્ય જાણી મેં સૂચિપદ આપ્યું છે અને તે આના
 યંત્રદનો મહોચ્છવ કરી આપને લાભ લેવો જોઈયે,
 વળી તેઓનાંયે યોગસિદ્ધિ જ્ઞાન અનુદાનના માટે
 પ્રથમ પંચ્યામ શ્રી ૧૦૦૮ મુનિરાજજી દીનરિજયજી-
 મણિ મહારાજ મહારાજ પદ પદની ઉચ્ચ પદની
 વિદ્યા કરવાનું નેમને માનું ને પંચ્યામજીયે પ્રે-
 મપૂર્વક સ્થાપિત કરે તે પદના મહોચ્છવમાં લાભ

लेनार सुश्रावक मन्थर गुर्जर कच्छदेशनिवाशी
भाईयोने आववामां अनुकूल जिह्वा सारोइ पर-
नपुर स्टेशन पास शिवगंज शहर पसंद कर्तुं अने
सृष्टिपदनुं मुहूर्त संवत् १९६७ ना वैशाख शुक्ल
द्वादशी उपर त्रयोदशी बुधवार शुभ लग्ना

॥ मर्यादा न्याय ॥

॥ नमः॥ सुन्दर्यो ॥



समयमां निधार्युं छे, ने उपर श्री संघ आनंददायक आ
मंगलिक महोच्छ्रवनां प्रसंगे जरूर पधारी अमाग
मनोग्थ सफल करशो, तेमज पंचतीर्थी यात्रानो
लाभ पण अनि उत्तम आवा प्रसंगे सानुकूल धरो,
बर्ला अष्टादशमहोच्छ्रवादि अक्षयतृतीयाधी प्रारभ
धनार छे.

लि. शिवगंजधी श्री संघना चरणकमलोपासक
नगरसेठ कल्याणजी सांघजीभाइ तथा शा. दीपचंद

सरस्वती सा मम चित्तरङ्गेऽ-

रं गेयमारम्भ्य नटीव नृत्यात् ॥ १ ॥

बादन हंसमें युक्त, हंसके जैसे गमन करनेमें चतुर, ऐसी वह सरस्वती नटीके जैसे अपने हाथमें अपनी (कच्छपीनामक) धीणाको लेकर गानको प्रारंभ कर मेरे चित्तमय नाटक परमें जलदी नृत्य करे ॥ १ ॥

पूर्णप्रसादेन हि यस्य नित्यं

महोन्नतिं प्राप्य जडाशयोऽपि ।

सज्ज्ञानरत्नाकरतां दधाति

पादान्नुमस्तस्य गुरोर्विधोर्वा ॥ २ ॥

जिनकी परिपूर्ण कृपासे जडाशय पूर्वभी नित्य बढ़ी उन्नति को प्राप्तहोकर अच्छे ज्ञान रूप रत्नोंके खजाने बनजाते हैं, ऐसे चन्द्रमा जैसे गुरु के चरणों की हम स्तुति करते हैं। चन्द्रमा भी (जन्मानय) समुद्रकी अपनी निर्मलता से उद्दाम को प्राप्तकर रत्नाकर बनादेता है, इसमेंही गुरुका चन्द्रमाके साथ सादृश्य बनलाया है ॥ २ ॥

० भाषार्थ श्रीभ्रातृचन्द्रगिरिराजाष्टकम् ।

मुक्तोपलोप्रधिलसद्दृढयो नित न्तं
सन्तन्त्रमन्त्रपरिशीलनसंगतात्मा ।

राजेय सत्प्रमददो मुनिराज एव

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥१॥

मुनि. पाँच रुप. तीर्थकर आदि यदन्माओंमें हृदय में धारण
जने हुए. आगमगिष्ठान और नयम्प्रागादि मन्त्रोंके स्मरणमें
स्वर, मन्त्रनोंमें हर्ष देने वाले राजाके जेमें यह मुनिराज
आचार्यभी श्रीभ्रातृचन्द्रगिरिभरमों परां जांभिन होने ररो ॥ १ ॥

निप्यानमुस्मरणपाक्श्रवणे हि यस्य

प्रीणन्ति दृग्दृश्यकर्मपुटान्मनुष्याः ।

दान्तः स संमितवचः कथनाभिलाषी

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥२॥

मनुष्य जिन । मुनिराज । के दर्शन करनेमें नेषोंको और

० श्रीभक्तप्रणव भ्रातृचन्द्रगिरिराजाष्टकम् । श्रीभ्रातृचन्द्रगिरि
इति नाम निम्नगतम् । इस अष्टकमें प्रत्येक श्लोकके पहल अक्षरोंमें
मुनिश्रीभ्रातृचन्द्रगिरि यह नाम निम्नगतम् । इसमें लिये ये अक्षर
मा. १२३४५६ ॥ और इस अष्टकमें यदन्माओंमें हृदय में
राजपरी ।
- मन्त्र स्वरार्थजन्ता मन्त्र प्रीतिदो राजपरीपदम् तु
भाषाटीका या अर्थम् ॥

स्मरण करनेसे हृदयको, और वाणीके श्रवण करनेसे कणोंको एकदम तृप्त करते हैं, वे शान्त, परिमित वचनको कहना चाहने वाले मुनिराज आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र सूरेश्वरजी यहां शोभित रहो ॥ २ ॥

भ्राजिष्णुजिष्णुमुकुटावलिबिम्बिताङ्गि

तोर्येश्वरं निजमनोमुकुरे दधानः ।

संधारितोत्तमशमो दमभृषितात्मा

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥३॥

जिनके चरण चांसठ मोहनोंके मुकुटोंमें प्रतिबिम्बित होगये थे, उन जिनराजको अपने हृदय रूप दर्पणमें धारण करने हुए, गम और दमते भूषित श्रीभ्रातृचन्द्रगुरुश्वरजी यहां शोभित रहो ॥३॥

तृष्णामपि प्रतिविमुच्य यदीयभक्ता-

स्तृप्ता भवन्ति यचनामृतपानतो नो ।

जैनागमाम्युनिधिमन्यनमन्दरः स

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥४॥

जिनके भक्तलोंके तृष्णाओं छोटकर भी यवनमय भक्षणके पान करनेमें तृप्त नहीं होते । यह आशयका बात है क्योंकि तो तृष्णा (व्यास) छोटने है यवन राजान है यवन उन मानवराज जेह भक्त तो तृष्णा समाप्त हो तृष्णा समाप्त हो यवन नहीं राज

१. अन्त्य १-२

२. अन्त्य १-२ १-२ १-२ १-२

जैनशास्त्र रूप समुद्रके मथन करनेमें मन्दराचलके जैसे वे भीष्मा-
तृचन्द्रसूरीश्वरजी महाराज शोभित होवो ॥ ४ ॥

चन्द्रो यदीयमुखचन्द्रवचोऽमृतौघ-

वर्षं विलोक्य हि सुधास्रवणच्छलेन ।

अभ्रूणि वर्षतितरां नितरां स साधुः

श्रीभ्रानृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥५॥

चन्द्रमा जिन (मुनिराज) के मुखरूप चन्द्रमाके वचनरूप
अमृतको वृष्टि देखकर अमृत वर्षनेके छलसे मानो निरंतर
आम्रही वर्षाता है, वह मुनि श्रीभ्रानृचन्द्रसूरीश्वरजी यहां शोभित
रहो । भावार्थ यह है कि यह चन्द्रमा अमृत नहीं वर्षाता है किंतु
इन मुनिराजके मुखचन्द्रको वचनरूप अमृतवृष्टि देख आद्य वर्षा
रहा है ॥ ५ ॥

द्रुप्तं पयोन्विति ससंभ्रममेव गोपै-

मुक्ताविवृष्टिरिति मुग्धतराङ्गनाभिः ।

देवैः सुधेति विदितं खलु यद्यशः स

श्रीभ्रानृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥६॥

जिन (मुनिराज) के यज्ञको गोपा-नेने दही वा दूध समझा,
और मुग्ध मिश्रीने धोतियोंका गण समझो; और देवाने अमृत
समझा । अथान् अथनं - १ । १ न अथना - २ अथ समझ जिनके

गजसे परम किया तो मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्र मूर्ति
शोभित रहे ॥ ६ ॥

सुनेडर्पारममनुलं गलु गौर्यर्थाया
मेनोपयोगमयते कतिनाट्टनिर्द्राक् ।

मथ्रीगुरुप्रारपादसरोजभृङ्गः

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥

जिन (मुनिराज) को वागोष्ण गौ उम अर्पुं अर्प
पगको उदय कर्मा दे, निगमे करिनारूप मेनो मन्त्रता
प्राप्त होने, ये गुरुप्रारपाद सरोजभृङ्ग धर्मरूप भाग्य में
भ्रातृचन्द्रमूर्तिशर्मा शोभित रहे ॥ ७ ॥

रिक्थं त्यजन्नापि विराजति सार्थको यो

मानं जहृश्च परिराजति यः समानः ।

श्रीमान्स तत्त्वसुगन्धेपणदत्तचेताः

श्रीभ्रातृचन्द्र इह राजतु सूरिराजः ॥८॥

जो कि मुनिराज धनको छोड़ते हुए भी सार्थक (अर्थ-धनसे
सहित) हैं । और मानको छोड़ने हुए भी समान (मान सहित)
हैं । यह आश्चर्य है । वास्तवमें धनको छोड़कर सार्थक (सफलता
सहित) हैं ही, और मानको छोड़कर मान-पूजा (आदर)
सहित हैं ही, वे मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्रमूर्तिशर्मा यहां (हृदयमें)
शोभित रहे ॥ ८ ॥

प्रथमाक्षरसुव्यक्ततदारूपमिदमुत्तमम् ।

अष्टकं सूरिराजस्य नित्यानन्देन निर्मितम् ॥१॥

प्रथम अक्षरोंमे उनके (मुनि भ्रातृचन्द्रसूरि) नामको प्रकट करने वाला यह सूरिराजाष्टक नित्यानन्देने बनाया ॥ १ ॥

अथभीमुचिदित शिरोमणी आचार्य

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिवृद्धयष्टकम् ।

अनुष्टुप् छन्दः ।

मुखाम्युजसमुत्पन्न-शास्त्रसारमधुं मुनिम् ।

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीन्द्रं वन्दे नन्दधुदायकम् ॥१॥

मुखरूप कमलसे शास्त्रोंके साररूप मकरंद उत्पन्न करनेवाले, मुनिराज, आनन्ददायक श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिश्वरजीको मैं प्रणाम करता हूँ ॥ १ ॥

उपनातिवृत्तम् ।

सुगुह्यमन्तं मनसा सुशान्तं

जिनेश्वराज्ञाः स्वधियाऽनुयान्तम् ।

जना भजध्वं सुगुणैः समेतं

श्रीभ्रातृचन्द्रं किल सूरिमेतम् ॥ १ ॥

अन्ते बुद्धिमान्, मनमे शान्त, अर्ग्य बुद्धिमे जिनेश्वरोंकी

। आचार्यपदनाभने बुद्धिमन्वाद् वृत्तानां धैर्यवृत्तानां क्रमेण गृह्यतां गृह्यष्टकमिति नाम सार्थकम् ।

आज्ञाको अनुसरण करते हुए, सहृणोंसे इक्त ऐसे इन श्रीभ्रातृ
चन्द्रमूरीश्वरजीको हे लोको ! तुम सेवो ॥ २ ॥

इन्द्रवंशावृत्तम् ।

सूरिं कृतस्थामिपदाभिवन्दनं

स्वीयाङ्गभासंजितचारुचन्दनम् ।

सदेशनाभिर्जनचित्तरत्ननं

श्रीभ्रातृचन्द्रं स्तुहि दुःस्वभक्षणम् ॥३॥

अपने प्रभु (तीर्थकारों) के पाद वन्दना करने वाले, अपने
भंगकी कान्तिमें चन्दनको जीतनेवाले, अच्छी व्याख्यान वाणीमें
सोहोंके वित्तको मुग्न करने वाले, दुःस्वहों नाश करने वाले श्री-
भ्रातृचन्द्रमूरीश्वरजी महागमकी हे पुण्य ! तू स्तुति कर ॥ ३ ॥

महागिर्गावृत्तम् ।

संशुद्धं श्रुतनिबहेषु मुप्रबुद्धं

निर्दोषं विरहितकाममानरोषम् ।

निष्कामं शुभमनिदं गुणाभिरामं

भ्रात्रिन्दुं नमन रुचा जयन्तमिन्दुम् ॥४॥

शुद्ध, प्रामुग्यमयमें मुप्रबुद्ध, शोध रहित, काम, मान प्रीति
कोरहों त्याग करने वाले, निर्दोष, विरहित मरणा, बुद्धिहों देने
वाले, निष्काम, मनोहर, शुभम, चन्दनवाले, जीवन वाले भाषा
श्रीभ्रातृचन्द्रमूरीश्वरजी तुम नमो ॥ ४ ॥

वसन्ततिलकं वृषम् ।

सत्यार्थसंमननपूर्णरुचि सुदान्तं

सद्धर्मचारणपरं परसौख्यहेतुम् ।

संसारसागरसुतारणकर्मलग्नं

श्रीभ्रातृचन्द्रमवगच्छत सूरिराजम् ॥५॥

सत्य अर्थके माननेमें पूर्ण रुचि वाले, जितेन्द्रिय, अच्छे धर्मके चलानेमें तत्पर, दूसरेके सुखके कारण, संसार समुद्रके तारणमें लगे हुए श्रीभ्रातृचन्द्रमूर्तिश्वर महाराजको ऐसे जानो ॥ ५ ॥

मान्दिनीवृषम् ।

कुशलसलिलवर्षाम्भोधरं धैर्यवन्तं

दुरितदलनमार्गं सत्वरं सूचयन्तम्

जिनपतिपदपद्मोपासनादत्तचित्तं

निजहृदि कलयामो भ्रातृचन्द्रं हि सूरिम् ॥६॥

कुशालरूप जलकी वृष्टि करनेमें मेघरूप, धैर्यवान्, पापके नाश करनेके मार्गको जल्दी बताने हुए, जिनराजके चरणकमण्डली सेवामें एकाग्रचित्त, ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रमूर्तिश्वरजीको हम अपने हृदयमें धारण करते हैं ॥ ६ ॥

मन्दाक्रान्ताग्रजम् ।

देशे देशे मुकृतकृतये मंचरन्तं महान्तं

काले काले जिनपदयुगं मंमगन्तं नितान्तम् ।

लोके लोके शुभकृतिफलार्थोपदेशान्दिशन्तं
मृतिं वन्दे हृदि परिगतं भ्रातृचन्द्रं शुभं तन्मृत्

देव देवमें भूम कर्मके लिये भ्रमण करने हुए, बड़े, काव ३
मे तिनगतके परगणकयन्त्रा स्पर्श करने हुए, मोंक ३ में प्रप
लापरागक कर्मोंका उपदेश देने हुए, इक्ष्ममें रहें हुए उन भ्रातृ
निगत भ्रातृचन्द्रगुणिभस्मीयों में वन्दन करना ॥ ७ ॥

गार्ग्यारकीदितं पृथम् ।

गागागागिगागगागणरत्नं यदप्येन्द्रियप्रामकं

मिहान्तागमममममंदिनममुं मरपमियाभायगम् ।
मम्यरपोत्तनमार्गमृगनपरं गाशाद्रुमं या मियमं

मिममं प्रनगागमिगदकं श्रीभान्तन्तन् भमं

आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिपट्टकम् ।

रघोदत्ताच्छन्दः

शीतकान्तिसमकान्तिकायकं

तीर्थनाथगुणवृन्दगायकम् ॥

शास्त्रतत्त्वकणिकाविधायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥१॥

क्रोधमानमदलोभजायकं

मोक्षमार्गश्रुताप्रणायकम् ।

तारणादिवहुसौख्यदायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥२॥

बोधिवोधनविधाविधायकं

देशनामृतरसप्रपायकम् ।

ज्ञानमुख्यवररत्नभायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥३॥

आत्मवाक्यगतवर्णमायकं

मुप्रशस्तजिनमार्गयायकम् ।

१ अस्मिन्पट्टके भ्रातृचन्द्रसूरिनायकस्य स च वाक्यप्रणायक-
वाक्यप्रणायक इति श्रुत्यया प्रतीयते ।
२ अस्मिन्पट्टके भ्रातृचन्द्रसूरिनायकस्य स च वाक्यप्रणायक-
वाक्यप्रणायक इति श्रुत्यया प्रतीयते ।

लोके लोके शुभकृतिफलार्थोपदेशान्दिशन्तं

सूरिं वन्दे हृदि परिगतं भ्रातृचन्द्रं शुभं तम् ॥७॥

देश देशमें शुभ कर्मके लिये भ्रमण करते हुए, वंदे, कान २
में तिनराजके चरणकमलका स्मरण करने हुए, लोक २ में अर्चने
लाभदायक कर्मोंका उपदेश देते हुए, हृदयमें रहे हुए उन श्री-
निराज भ्रातृचन्द्रमूर्तिश्वरजीको मैं वन्दन करता हूँ ॥ ७ ॥

गार्दूलविक्रीडितं वृत्तम् ।

सारासाराविचारचारणरतं वश्येन्द्रियग्रामकं

सिद्धान्तागममर्मवेदिनममुं सत्यप्रियाभाषणम् ।

सम्यक्त्वोत्तममार्गसूचनपरं साक्षाद्गुरुं वा स्थितं

ध्यामन्तं धृतचारुसूरिपदकं श्रीभ्रातृचन्द्रं भजे ॥८॥

सार और अमार्गके विचार करनेमें तत्पर, जितेन्द्रिय, सिद्धान्त
और भागमार्गके मर्मको जानने वाले, सत्य और प्रिय बोधने
वाले, सम्यक्त्वके उत्तम मार्गको सूचन करने वाले, सूरिपदको पावन
करने वाले मातापुत्र बृहस्पतिके जेने इन ध्यामान् मुनि महाराजकी
भ्रातृचन्द्रजीको भजन करता हूँ ॥ ८ ॥

आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य सुखवृद्धयष्टकं शुभम् ।

धर्मवृद्धिप्रदं नृणां नित्यानन्देन निर्मितम् ॥९॥

दुःखोंको खर्षकी वृद्धि देने वाला आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रमूर्ति-
श्वरजीका यह वृद्धयष्टक नित्यानन्देन बनाया ॥ ९ ॥

आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्रसूरिपदकम् ।

रघोदत्ताच्छन्दः

शीतकान्तिसमकान्तिकायकं

तीर्थनाथगुणवृन्दगायकम् ॥

शास्त्रतत्त्वकणिकाविधायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥१॥

क्रोधमानमदलोभजायकं

मोक्षमार्गशृङ्गुताप्रणायकम् ।

तारणादिवहुसौख्यदायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥२॥

बोधिबोधनविधाविधायकं

देशनामृतरसप्रपायकम् ।

ज्ञानमुख्यवररत्नभायकं

भ्रातृचन्द्रमयं सूरिनायकम् ॥३॥

आत्मवाक्यगतवर्णमायकं

मुप्रशस्तजिनमार्गयायकम् ।

१ अक्षिप्रपदके १६१४कमेवाग्र्यास एव न वायव्य ० १५४-

चायव जायव इति कउपनयः प्रणायव

० इय तंभाय १८४ कय अग्र्याद ० राधय इत्यथ

दर्शनाऽनुलितमोदरायकं

भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥४॥

सर्वशास्त्रशुभसारलायकं

स्वीयसद्गुरुसुकीर्तिनायकम् ।

शान्तिचारुशयनाधिशायकं

भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम् ॥५॥

अर्थसद्विषयवाग्निपायकं ।

दान्तिवीर्यैजितपञ्चसायकम् ।

वर्जनीयसमदोषहायकं

भ्रातृचन्द्रमय सूरिनायकम्

भाषा टीका—चन्द्रमाके सप्पान शरीर कान्ति बाले, समस्त
त्रिनेश्वरीके गुणसम्पदको माने बाले, शास्त्रके सर्वकणको बूझने
बाले ऐसे भ्रातृचन्द्रमयसूरिभारतीका (हे मित्र !) तू शरण ले ॥१॥

क्रोध, मान, मद, और मोह इनको भीतने बाले, मोक्ष
मार्गकी सरलता बनाने बाले, तारण आदि बहुत पुरस्कार देने बाले
ऐसे भ्रातृचन्द्रमयसूरिभारतीका शरण ले ॥ २ ॥

१ ब्रह्मात्मवृत्ति रूपम् ।

२ विद्यावान् मनुज रूपम् । विषयकणेश दशैकमिति भावः ।

३ शत्रुं प्रनाशकम् ।

सम्पत्ति जनानेके प्रकारको बतलाने वाले, देशना रूप अमृत
रसको पाने वाले, ज्ञान आदि रत्नोंसे शोभित होने वाले ऐसे
भ्रातृचन्द्रमूरीश्वरजीका शरण ले ॥ ३ ॥

अपने वारणके असरोंका परिमाण करने वाले अर्थात् परि-
माणके बचनको कहने वाले, अच्छे जिननेन्द्रके मार्गमें चलने वाले,
दर्शनके अपूर्व आनन्दको देने वाले ऐसे श्रीभ्रातृचन्द्रमूरीश्वरजीका
शरण ले ॥ ४ ॥

सब शायोंके अच्छे २ सारको ग्रहण करने वाले, अपने
गुरुकी कीर्तिको फैलाने वाले, ज्ञानि रूप अच्छी शय्या पर सोने
वाले ऐसे भ्रातृचन्द्रमूरीश्वरजी महारामका नू शरण ले ॥ ५ ॥

अर्थ और अच्छे विषयकी वाणीको विषयरूपसे बतलाने वाले,
इन्द्रिय दमनके प्रभावमें कामदेवको जीतने वाले, धर्मने लायक
एक दोषोंको त्याग करने वाले ऐसे मुनि महाराम आचार्यश्रीभ्रा-
तृचन्द्रमूरीश्वरजीका (हे मित्र) नू शरण ले ॥ ७ ॥

नित्यानन्देन रचितां श्रीमंघमुखपङ्कजे ।

श्रीभ्रातृचन्द्रमूरीश्वरपदं पदपदनामितान् ॥ १ ॥

यह नित्यानन्दका बनाया हुआ आचार्यश्रीभ्रातृचन्द्रमूरीश्वर
पद, श्रीमंघके मुख वयस्में भ्रमर पंखको मात्र दोरो, अर्थात् मुख
पर निवास करो ॥ १ ॥

श्रीभ्रातृचन्द्रसूरीपदपदी ।

“ व्रजराज आज माँवरो वंशी बजा गयो ”

इत्यनेन रागेण गीयते ।

श्रीभ्रातृचन्द्र सूरिराजमर्थदायकं ।

भजस्व हे सखे गुरुं विरागिनायकम् ॥ टेरे ॥

संसारमेतमुज्झितुं ममोहसे यदा ।

मुक्तिं च यातुमिच्छसि प्रमोदतस्तदा ॥ १ ॥

श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥

प्रवेशमोहसे यदा धियो निवेशने ।

तदा मनःप्रसारये ममोपदेशने ॥ श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ २ ॥

करालकाल एव संनिधौ समागतः ।

किमीदृशे विनश्वरं फलं हि रागतः ॥

श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ३ ॥

विहाय कर्म शास्त्रमर्म धर्मकर्मणे ।

ग्रहीतुमोहसे यदा तदा मुशर्मणे ॥

श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ४ ॥

श्रीपार्श्वचन्द्रसूरीराजवंशदीपकं ।

मुमुक्तिराजधानिकाध्वनः ममोपेकम् ॥

श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ५ ॥

तपः प्रकर्षनिर्जितोरुञ्चसायकं ।

महानिदेशनामुधारसप्रपायकम् ॥

श्रीभ्रातृचन्द्र० ॥ ६ ॥

नित्यानन्देन रचिता भाईलालेन गापिता ।

आचार्यभ्रातृचन्द्रस्य पदपद्यास्तां मुखाम्बुजे ॥ १ ॥

भाषटीका । हे मित्र ! बाँडित अर्थकों देनेवाले, गुरु
मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्र मुरारिाज मगराजको सेवन कर ॥ देर ॥

भोकि तू इस संसारको छोड़ना चाहता है, और जो मुक्तिको
जाना चाहता है तो हर्षसे हे मित्र ! बाँडित अर्थकों देनेवाले । १।

तू मुझिसे घरमें जो प्रवेशको चाहता है तो मेरे उपदेशमें मन
फैला । हे मित्र० ॥ २ ॥

यह भयंकर काल पासमेंही आया हुआ है, रागसे क्या अनित्य
गुणको देख रहा है । हे मित्र० ॥ ३ ॥

भोकि तू (सांसारिक) कर्मको छोड़कर परम करनेके लिये
शाम्भूके कर्मको लेना चाहता है तो मुक्तिके लिये । हे मित्र० ॥ ४ ॥

(श्रीट्टचपागन्धीय) श्रीपार्श्वचन्द्रमृतीभरणीके वंशके दीपक,
मुक्तिरूप राजधानीके मार्गको समीप करनेवाले । हे मित्र० ॥ ५ ॥

तपके प्रकर्षसे कामको जीतने वाले, व्याख्यानरूप भस्वरसके
पानेवाले । हे मित्र बाँडित अर्थकों देनेवाले गुरु मुनिराज आचार्य
श्रीभ्रातृचन्द्रजी मुरारिाज मगराजको सेवन कर ॥ ६ ॥

नित्यानन्दशर्मासे बनाई गई, और 'भाईलालजीसे मा
 गद आचार्य श्रीभ्रातृचन्द्र मुरीश्वरजीकी पदपदी मुख्य
 पर रहो ॥ १ ॥

ॐ श्रीः ॥

॥ श्रीभ्रातृचन्द्राभ्युदयम् ॥

महदयमण्डली । (सप्तोद्धारमणैः)

एष द्विजाधिपतिनां मुकलोऽनुभूय
 मत्तारकाधिपदं रुचिरं दधानः ।

सूर्यामनं धग्नि हन्न करप्रसार-

व्यक्तामृतः सुबुधयोगमवाप्य चन्द्रः ॥३॥

(इति वृत्तः पञ्चमः)

श्रीभ्रातृचन्द्राभ्युदयम् । [निगम्य] किं भग्नि धरती, किं दध
 नुस्योगं वाप्य सूर्यामनं धग्नि ? भरो भव विपदं विपरीतस्य
 कथं नृ मारीपनिनेयम् ।

(॥ ३ ॥)

आयकमण्डली । अहो एतैः पदैर्धेदुमर्षं ध्वनयति भवती
नर्षं निस्तीक्ष्णानन्ददानेन परमरूपाक्रीता भरिष्यामि ।

सहृदयमण्डली । शृणु सावधानम् ।

एष हि मुनिस्त्रिगोमणिः—

श्रीमत्पर्वतनाथकार्मुदगिरिप्रान्तप्रदेशस्थित—

वडूग्रामनिशामिनो गुणिवरादौदीन्यविप्रात्सतः ।

जन्म प्रापदमौ स्वमातृ-विजयाकुक्षौ सुपुण्ये दिने

भार्गवन्द इति प्रथां च धृतवांश्चन्द्रोपमाङ्ग श्रुतेः ॥२॥

इति दिनशुभोत्पत्त्याद् “दिनाधिपतितामनुभूष” इति श्रु-
तिम् । अयं च भार्गव्ये दानुभोक्ता कन्याकुक्ष्यो वाऽऽसीदतः “सु-
खम्” इत्युक्तम् ।

अपि च—

मुक्त्यध्वचन्द्राङ्गणिमुक्तिचन्द्रतो

दीक्षां च विश्रामधृतायमुन्मनाः ।

श्रीमण्डलाचार्य-विरागिमौलिना

योगेन पश्चात्कुशलेन्दुनोद्धृतः ॥३॥

‘अत एव सगन्तव्यात्ताम्रकाणां मूनीनामधिपस्य पदमिति व्यक्तम् ।

॥ २ ॥

‘नाना तानि जह्य-प्रनाम व्याज नो त्ययम् ।

‘अत एव सगन्तव्यात्ताम्रकाणां मूनीनामधिपस्य पदमिति व्यक्तम् ।

यद्वा ‘नाना तानि जह्य-प्रनाम व्याज नो त्ययम्’ इति तावका मूलपद्य

प्रकटीकुरुते मुक्ति-पदवीमदेवीयसीम् ॥२॥

अत एवोक्तं करमसारव्यक्ताय इति ।

किञ्च—

श्रीमज्जगच्छ्रेष्ठिगुरुवतीन्द्र-

श्रीहेमचन्द्राऽऽग्रहयोगमाप्य ।

तद्योग्यकर्मा कथमप्यनिच्छं-

श्चिरादसौ सूरियदं दधाति ॥५॥

अतः मृषुष्ययोगमाप्य सूर्यासनं दधानीत्युपश्लोकिनम् । अतः सत्यमेवोक्तम्—

“एष द्विजाधिपतिना” इत्यादि पुनः पठति ।

श्रावकमण्डली । [आकर्ण्य] आर्ये ! सहृदयमण्डलि ! यन्दे भवतीम्, कृतार्थीकृताऽस्मि भवन्त्ये तेन गुरुवररोचपदवीनातिरूपपरम हर्षवृत्तश्रावणेन । किं बहुना, आत्मवशीकरणेनाऽपि नाऽहं भवत्या अनृणीभावं प्राप्नुं क्षमे । इति [मुहुर्मुहुः पादयोः पतति]

सहृदयमण्डली । किमिति परं स्पृहणीयम्, तथाप्यानासे-

अज्ञानध्वान्तराशि-प्रविदलनपटुः सद्दिवेकप्रकाश-

संचारासप्रशंसो मृदुतस्वचनापूर्वपीयूषवर्षी ।

नक्षत्रैर्वा स्वशिष्यैः महचग्गविधिनाममं पूर्गदा ध्यै-

श्रन्दो वा भ्रातृचन्द्रो जनकुमुदगणं बोधयन्मन्त्रि-

राज्यात् ॥६॥

इति ॥

दाधिचेनाशुकविना नित्यानन्देन शास्त्रिणा ।
 भ्रातृचन्द्रोदयं नाम खण्डनाट्यं प्रदर्शितम् ॥१॥
 इति श्री योषपुरस्थ दाधीच-कासल्योपाख्य-यं, नित्यानन्द शास्त्रिण
 श्रीभ्रातृचन्द्राभ्युदयं नाम खण्डनाट्यं समाप्तम् ॥

॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥

अथ श्रीजैनाचार्यतद्गुरुश्रीभ्रातृचन्द्रसूरीश्वर स्तुतिः ।

अनुष्टुप् छन्दः ।

श्रीमद्वृहत्तपागच्छे स्तुच्छे नागपुरीयके ।

त्यागवैराग्यमंपन्नान्सूरीन्बुधविषुन्मजे ॥ १ ॥

श्रीचतुर्विधसंधेन दत्तं प्राचीनरीतितः ।

जैनाचार्यपदं येभ्यस्तान्स्तुवे हर्षतो गुरून् ॥ २ ॥

अलौकिकगुणश्रामा-भिरामान्सूरिपुंगवान् ।

आचार्यभ्रातृचन्द्राग्यान्वन्देऽहं ज्ञानवृद्धये ॥ ३ ॥

औदार्य-धैर्य-गाम्भीर्य-शम-शीलगुणान्वितान् ।

युगप्रधानमरीन्तानुगामेर्ज्यपदाम्बुजान् ॥ ४ ॥

१. यत्नात्न-नागपुत्र ट.क. म्य के.व.२. महदयजनश्रयममंकन्याप्र
 देन्दोभाषा दाधितेता ।
 २. अस्याः स्तुतिः योग्यतया समाप्त पदादि परिवर्तनं स्वतः
 नि दा ॥

येषां वागमृतामरैः ऋपूर्गश्रवणान्नगः ।

जायन्ते हर्म्यमंपन्ना भव्यलोका नमामि तान् ॥ ५ ॥

पण्डितानां कवीनाञ्च पूज्यान्गुणवतो गुरुन् ।

वाह्याभ्यन्तरमंपत्ति-मनः मेवे प्रमोदतः ॥ ६ ॥

कपायमुक्तान्योगीशान्पदाचारप्रपालकान् ।

भवाञ्चितारणे पोतान्हृदि ध्यायामि मद्गुरुन् ॥ ७ ॥

पैशुन्यवचनद्वेष-मोहद्रोहविवर्जितान् ।

पद्त्रिंशत्सुगुणोपेतानाचार्यान्मंभगम्यहम् ॥ ८ ॥

इतिश्रीभ्रातृचन्द्राख्य-मूरिराजस्तुतिं हि ये ।

पश्यन्ति शुद्धभावेनाऽ-जस्रं लब्धीं भजन्ति ते ॥ ९ ॥

इतिश्रीमन्नागपुरीयवृद्धतपागच्छ-गगनाङ्गनभोषणि मुनिशिरोमणि-

सुगमधान-जैनाचार्यश्री १००८ श्री भ्रातृचन्द्रमूर्गीश्वराणां स्तुति-

स्तच्छिष्येण मुनिसागरचन्द्रेण रचिता समाप्ता ।

स्तुतिकुसुमाञ्जलिः

॥ ॐ ऐं श्रीं ह्रीं नमः ॥

गीतिः

मद्गुणहेमपरीक्षा-निकपः श्रीशैवगंज मंत्रोऽयम् ।

१. अस्यां रचनायां योग्यतयाऽस्माभिः पदादिपरिचर्जनं कृतम्-
पं. नि. शा ।

जजोयतां म मकलः श्रीभ्रात्रिन्द्रोः कृपार्द्रदृष्टान्तैः॥१॥
पाणिनी

प्रथितपरमबोधेनात्र मंवीक्ष्य सूरि-
पदममचिन्तां श्रीभ्रातृचन्द्रे मुनीन्द्रे ।

विततशमदमार्थः मद्गुणैः शोभमाने
जलनिधि-(४) विधमंघो दत्तवान्मार्थकं तत्॥ २॥
उपजानिष्टम् ।

मुनीन्द्रवृन्देडितपादपद्म-सुर्वीतले मद्गुणरत्नमञ्ज ।
वाचाद्वाचाऽऽहतमोक्षपद्मं भ्रात्रिन्दुमाचार्यपदस्थमोडेश ।
श्रितान्विशो द्रागदुरितद्विपातु मदा मुधामोदरदेशनाभिः ।
सुधां महर्ष भुवि पापयन्त्रं भ्रात्रिन्दुमाचार्यपदस्थमोडे । ४ ।
विकारजालं क्षिपतीमर्षी दयादृग्नैकमुधाभिवर्षाम् ।
मूर्तिं मुलावण्यमयींदधानं भ्रात्रिन्दुमाचार्य० ॥ ५ ॥
कृपावर्षाक्षैरघभेददक्षैर्निगन्तर्षं मुकृन्तैकदक्षैः ॥
न्यक्षान् मुनिप्यान्प्रतिबोधयन्त्रं भ्रात्रिन्दुमाचार्य०॥६॥
विद्वज्जनस्वान्तमगोमगच्छं मोहाद्यग्निंमविशैकगल्म ।
मन्त्रंमन्त्रार्थैकमुर्वशाटं भ्रात्रिन्दुमाचार्य० ॥ ७ ॥
पद्यालतासोपगजानतोपं ज्ञानैककोपं मुनिगन्तदोषम् ।
मनुजान् ।

मद्वृत्तवृत्तवनदोष्मोपं आत्रिन्दुमाचार्य० ॥ ८ ॥

पुण्येगिनामुत्तममुक्तिगमां न्यध्यानसंप्रतिमर्चकामा

मंकीड्यन्तं हृदयाभिगमां आत्रिन्दुमाचार्य० ॥ ९ ॥

चाग्निगम्यं मुक्तैकगम्यं ममप्रलोकोद्भिनतास्तम्य

युगप्रधानं च युगेज्ज गम्यं आत्रिन्दुमाचार्य० ॥ १० ॥

इदमद्वकं पुष्पाद्वचिं श्रीदीपचन्द्रमुनिपम्य ।

प्राप्ते दुर्गांगु इह विहितनवावामकेन मयदा वै ॥ ११ ॥

मद्यानदे मद्योन्मादाः-निशिः कुमुमाव्रजिः ।

ममागदां मुदे म्नाड उमाशङ्कशाश्विगः ॥ १२ ॥

पञ्चचापं वृत्तम् ।

मुनिधृताद्व (११.१०) मिताद्वकेल मानि मा

वदशाःगंजयं वृत्तीयदिने विधि ।

वर्णादिः मुद्राद्वत गप मुद्राव्रजि

दिनिनि मुद्राव्रजस्य अश्वदत्तवत्तम् ॥ १३ ॥

इति मद्योन्मादाः-निशिः कुमुमाव्रजिः ॥ १४ ॥

मद्योन्मादाः ॥

॥ श्रीगुरुपदपदी ॥

॥ भज गोविन्दं भज गोविन्दं गोविन्दं भज मृदमते ॥

इति रामेण गीयते ।

नर गुरुचरणं नर गुरुचरणं नर गुरुचरणं कुरु शरणम्,
प्राप्ते काले महति कसले नहि नहि रक्षति संसरणम् ॥

नर गुरु० ॥ ८८ ॥

बाल्येऽधीतं किमपि शास्त्रं वयसि नवेत्वां द्यति मदनास्त्रम् ।
जहति जरायामपि निजमृता अन्ते व्यथयन्त्यह यमदूताः॥

नर गुरु० ॥ १ ॥

नहि गुरुवर्जं भवति विवेकः सूर्यमृतेऽन्धं स्यंति भुवने कः।
ज्ञानमृते नो भवति हि मुक्तिः-स्तन्मन्तव्या मपदि महुक्तिः॥

नर गुरु० ॥ २ ॥

ज्ञानमृते नहि नागनागं वेमि कुरु त्वं मनसि विचारम् ।
तदनवोधाद्रमणमनेकं यामि तनस्त्वं कुरु गुरुमेकम् ॥

नर गुरु० ॥ ३ ॥

इच्छामि चेत्त्वं पश्यदमेतुं तत्तु भजादि गुरुमिह हेतुम् ।
नियं मौग्यं तदनु विचार्य हेतुमते नहि मिद्वयति कार्यम्॥

नर गुरु० ॥ ४ ॥

येन क्रियते सरलः पन्था-स्तद्वारायुः सुपदा ग्रन्थाः ।
सोःक्षरमेकं गुरुरिह दत्ते सिद्धयत्यक्षरमेव हि तत्ते ॥

नर गुरुः ॥ ५ ॥

सेवन्ते नो ग इह तमेतं ते सेवन्तेऽनि यमनिकेतम् ।
निगानन्दो यदभिमतस्ते तद्वाग्मात्रं कुरु निजमेतं ॥

नर गुरु चरणं ॥ ६ ॥

निग्यानन्देन श्रिता बुधमतेन गापिता ।
इयं गुणैः पदपदिका यायात्मा शमिकाननम् ॥ १ ॥

शिवी निग्यानन्दादिरुपा गुरुगुरुविता गणना ।

यथा दीप्ता । हे मनुज ! गुरुकं वाग्वक्ता शरणं मे । भवेत् ॥

विचार तो कर । उसके न जाननेसे अनेक भ्रमको तू प्राप्त होता है
तो तू एक गुरु बनाछे ! हे मनुष्य० ॥ ३ ॥

जो तू परम पद पाना चाहता है, तू उस (परम पद पाने) में
आदि कारण गुरुको सेव । उसके बाद हमेशः सुख भोगना, क्योंकि
कारण बिना कार्य नहीं होता ॥ हे मनुष्य० ॥ ४ ॥

जो सरल मार्ग बना देता है, उसही जरिये ग्रन्थ सुभीतेसे पढ़े
जाते हैं, यहां पर गुरु उस एक अक्षरको देता है जोकि तेरे अक्षर
(मोक्ष) सिद्ध होता है । हे मनुष्य० ॥ ५ ॥

जो इस मोक्षमें उत्तरो नहीं सेवते हैं, वे मारु अत्यन्त यम-
लोकको सेवते हैं, जो तेरे नित्यानन्द (मोक्ष) प्यारा है तो मेरी
वाणी रूप मायाको अपने शिरपर धारण कर । हे मनुष्य ! तू
गुरुके चरणका शरण कर० ॥ ६ ॥

नित्यानन्दसे बनाई गई, और बुधमलजीसे गवाई गई वो यह
गुरुपदपदी रसिक पुरुषोंके मुंहपर शोभित होवो ॥ १ ॥

—ॐ३०५०३—

॥ अथ श्री सूरिपदलाभोत्सव वर्णनम् ॥

मनमग्नं वृत्तम् ।

आर्यावर्त्तेऽन्ते मरुभूमेः मुमनोऽज्ञ-

ग्यागारं मद्विष्णीकं मुनिपद्मम् ।

१ ये गायनमहाशय शायपुरमहाराजाधन दाहमा भासोपा
हैं, और हमारा प्रिय मित्र र मार य मुद्रासद्व घटिकापन्त्रशोधक
(Watch Master) भी हैं ।

निम्बस्तम्बाल्लक्ष्यलभन्मत्तमंयूरं

श्रीरोह्याः सं-भाति मुखं श्रीशिवगङ्गम् ॥ १ ॥

भा. टी. । हिन्दुस्थानमें मारवाड़के असीरमें, गिरोहीगढ़, मनोहर गढ़ी और मकानवाला, अच्छे बाजार और दूकानवाला, निम्बके पत्तोंके गुच्छोंमें नहीं मालुम होने हुए हैं समग करते हुए उन्मत्त यूर निम्बमें ऐसा श्रीशिवगंज नामक नगर है ॥ १ ॥

गीनिवृत्तम् ।

गुर्जरदशीयानां पुरुषाणामपि मरुस्थलीयानाम् ।

मध्यस्थितेरतिनरां सुलभतया प्रीतिहेतुकंतया चाग्रा

तत्र पुरे खम्बात-स्थितिर्विद्वंश्रीमालिपुष्पचन्द्रस्य ।

तनयो हि दीपचन्द्रो मुख्यतयाऽमुं महोत्सवं चक्रे ॥

युगम् ॥ ३ ॥

मध्य होनेके कारण गुजराती और मारवाड़ी लोकोंके अत्यन्त गुल्म होनेमें, और भीतिके कारण होनेमें उस (शिवगंज) नगरमें खम्बात के स्थिति श्रीमाली पुष्पचंदनीके पुत्र मेठ दीपचंदनीने मुख्यतयामें इस महोत्सवको किया ॥ २ ॥ ३ ॥

शाविनीवृत्तम् ।

तत्रोद्देशे पश्चिमेऽपिनांजलि

दृष्ट्या मोक्षः समभामण्डपोऽभन ।

यश्चेष्टाभिः सत्यताकाङ्क्षलीनां
देवद्वन्द्वान्याहयन्सन्निरेजे ॥ ४ ॥

उस नगरमें पश्चिमकी तरफ अदृष्टित कपड़ेका बना हुआ ऊँचा
सभामंडप था । जोकि पनाका रूप अंगुलियोंकी चेष्टाओंसे मानो
देव और देवियोंको बुलाना हुआ सोहता था ॥ ४ ॥

वसन्तनिलकं वृत्तम् ।

धत्तेऽन्तरात्मनि जिनेशपदाम्बुजं यः
सम्पत्त्वमत्रलभते स हि शीघ्रमेव ।

इत्यादिशस्त्रिन् निजान्तरधारितार्हन्
सम्पत्त्वमुत्तममहो विधरन्य आभात् ॥ ५ ॥

“जोकि अपने अन्तःकरणमें जिनेन्द्रके चरणकमलको
धारण करता है वह यहां जन्मी ही सम्पत्त्वको पा लेता है” इस
वाक्यका उपदेश देता हुआ ही मानो जो (सभामंडप) जिनेन्द्रको
अपने अन्दर धारण करके उत्तम सम्पत्त्व (अच्छे पने) से युक्त
स्थापित हो रहा था ॥ ५ ॥

आरभ्य राघसितपक्षत उत्सवोऽयं
रात्रीश्वरेण महं हन्त सहोदितेन ।

शुद्धिं दधत्प्रतिदिनं सुतरां रराज
युक्तैव मार्द्धमुदितस्य हि मार्द्धमेधा ॥ ६ ॥

यह उत्सव वैशाख शुक्ल पक्षसेही लेकर अपने साथ उदय पाये
चन्द्रमाके साथ हमेशा बुद्धि पाता हुआ सोहता था । अर्थात्

मनोहर रचनावाला प्रभु पानका प्रभुकरण करने वाला, इन्द्र-
लका आदि कारण उग वक्त माना हुआ ॥ १२ ॥

प्रांगवगस्थितिपाली मुखेशशास्त्रीह ममरदोवाली ।
मध्याहितकरनाली-ध्वनिर्नत्तोञ्जगौ च गानृगगः ॥१३॥

यहां पर अच्छे वेश वाले, वरावर पार उठाने वाले, कानों
ताली मारने वाले प्रांगवगमें रहने वाले गायक गगनं नृत्य किया
और गाया ॥ १३ ॥

वैशाखे सितपक्षे द्वादश्युत्तरगन्त्रशोदय्याम् ।
बुधवारं सुमुहूर्ते जुमितेः माद्रष्टि दादने प्रातः ॥ १४ ॥

पं. न्यासक हितविजय प्रगद्यमानोचिनक्रियाराग्यम् ।
श्रीभ्रातृचन्द्रमुनये प्रीत्या प्राचीनशुद्धरीत्या च ॥१५॥

सूरिपदं मोदपदं प्रददौ श्रीसंघसंहतिः मुनिराम् ।
अन्तरमन्तीं च मुदं तदोज्जगार ध्वनिच्छलाह्लोकः ॥

तिलकम् ॥ १६ ॥

वैशाख शुद्ध १२ के ऊपरकी १३ के दिन बुधवारको अच्छे
मुहूर्तमें प्रातःकाल अनुमानसे ८॥ बजे, पं. न्यासजीश्रीमुनिरहित-
विजयजी महाराजके उचिन क्रिया पाठके बोलने पर मुनिरामश्री
भ्रातृचन्द्रजी महाराजके किये श्रीसंघ समुदायने प्राचीन रीतिसे ह-
र्षके स्थानभूत आचार्य पद दिया । उस वक्त लोकोंने अन्दर नहीं
माते हुए हर्षको (जय) शब्दके पिपसे उगाया ॥१४॥१५॥१६॥
उद्गीनिवृत्तम् ।

मङ्गलचूर्णं तूर्णं परिपूर्णं चित्रिपे लोकैः ।

जिनशासनस्य जगदे जयस्तदा भ्रातृचन्द्रमूरेश्च ॥१७॥
 लोकेने जगदी परिपूर्ण वामक्षेप पटका, और जिनशासनका
 जय तथा श्रीभ्रातृचन्द्रमूरीधरजीका जय कहा ॥ १७ ॥
 अनुष्टुप्चतुष्टुपम् ।

तत्काले मुत्कलकलो लोकैः संकलितः कलः ।
 व्यानशे सकला आशाः सह मङ्गलपांसुना ॥ १८ ॥
 निर्मूर्द्धन्यम् ।

उस वक्त लोकोसे किया हुआ, मधुर हर्षका कोशाल, वास-
 क्षेपके साथ सब दिशभोंमें फैला ॥ इस श्लोकमें मूर्द्धा स्थानके
 अक्षर नहीं हैं ॥ १८ ॥

तदा सिंहासनगतः साधुः प्राप्तमहापदः ।
 पूर्वगोत्रोद्गतो ग्लौर्वा बभौ भ्रातृकपाकरः ॥ १९ ॥
 निस्तालव्यम् ॥

उस वक्त निरासन पर बैठे हुए, बड़े (मृगि) पदको
 पाए हुए मुनिराज श्रीभ्रातृचन्द्रजी महाराज पूर्वपर्वत पर उगे हुए
 चन्द्रमाके जैसे शोभित हुए ॥ इस श्लोकमें तादृश्यानीय अक्षर
 नहीं हैं ॥ १९ ॥

मात्रि-गीतम् ।

हितविजयगणीन्द्राद्यास्तदा नेमुगर्या—

१ लाघव । मध्यमे मुख्यमया पुरस्तेन निर्देशस्तत्र क्रियायाऽन्यथा ।

स्तदनु मविधि शिष्याः पूर्णचन्द्रादयस्तम् ।

नृपसुतपदि-देवेन्दु-ज्ञ-कल्याणचन्द्रा—

दिकयतय इतोऽन्ते श्रावका दीपकाद्याः ॥ २० ॥

उस वक्त पं. न्यास हितविजयजी गणी आदि साधु, उनके बाद पूर्णचन्द्रजी आदि शिष्य, महाराजकुमार श्रीदेवचन्द्रजी, कल्याणचन्द्रजी आदि यनि, और इनके बाद दीपचन्द्रजी आदि श्रावक उन मूरीश्वरजी महाराजको वन्दन करते भये ॥ २० ॥

उपगीनि वृत्तम् ।

विक्रमपुरजबहादुर-मल्लादिश्रेष्ठिनो मोदात् ।

व्यभजन्सुमोदकानि प्रभावनायां ततोऽनुगृहम् ॥ २१ ॥

बीकानेरके सेठ बहादुरमलजी रामपुरिया आदि बड़े २ सेठोंने हर्षसे प्रभावनामें लड्डू बाँटे, और फिर मल्लेक परमें भी लड्डू बाँटे ॥ २१ ॥

उपजाति वृत्तम् ।

प्रभावनायां शुभभावनायां सुनालिकेरणि मनोहराणि ।

हन्मोदकान्यत्र च मोदकानि विभेजिरे ऽन्ये ऽपि च मे-
जिरे शम् ॥ २२ ॥

औरोंनेभी अच्छी भावनावाली प्रभावनामें मनोहर नारियन, मनको मुग्ध करने वाले लड्डू आदि बाँटे. और कल्याण पाया ॥ २२ ॥

दाधीचेनाशुकविना नित्यानन्देन शास्त्रिणा ।
 एतत्कृतं सूरिपद-लभोत्सवविवर्णनम् ॥ २३ ॥
 इति श्रीपोषपुरस्य दाधीच-कासल्योपाख्य-धोरधुरीण-माधवमुनाऽऽ-
 शुकवि पं. नित्यानन्दकृता सूरिपदनाभप्रशस्तिः समाप्ता ॥
 दाधीच आशुकवि पं. नित्यानन्द दाक्षी ने यह सूरिपद लभो-
 त्सव वर्णन किया ॥ २३ ॥
 इति श्री पं. भगवन्दीयल-विद्याभूषण रचिता भाषाटीका समाप्ता ॥

॥ श्रीसरस्वती नमः ॥

श्रीसरस्वती स्तवः ।

पञ्चषापरं वृत्तम् ।

यदीयसत्ततिक्रमेण संजितो नदन्कलं
 मनोज्वधानतोऽनुतोलयन्स्वनं हि मैत्रैलम् ।
 प्रयात्यधः मितच्छन्दो विभाव्य नैजमङ्गलं
 श्रयामि तन्मरस्वतीपदाम्बुजन्मयामलम् ॥ १ ॥
 स्वमावहन्पितामहोऽपि देवगजमङ्गलं
 विशुद्धमानमोरुभक्तियोगतो ह्यवाङ्मयम् ।

१ एष स्तवः सद्योपयोगिनित्याऽत्र प्रकाशितः । २ काश्चीन
 इवन्धितम् । ३ हस । ४ पादाब्जयुगम् । ५ देवगजसौख्य
 पदसमुदायवर्त) स्वमाग्मानम् । ६ अलमम्यर्थः । अवनतः ।

श्रुतिप्रशीलनाविधौ यदस्तवीदचञ्चलं
स्तवीमि तत्सरस्वती० ॥ २ ॥

यदीर्ष्ययेव कण्टकान्वितं सरोजमुच्छल-
त्रिलीनभृङ्गमण्डलीविदष्टमादधञ्जलम् ।
मधुच्छलेन मुञ्चतेऽश्रु भुक्तसञ्जलञ्जलं^९
दवामि तत्सर० ॥ ३ ॥

भृतिं सुयोक्तुमीश्वरं तथा यथा दुधात्रलं
मनोहरं यदुल्लसत्सरोजकान्तिपाटलम् ।
सुरक्तमादधाति भक्तमात्मकीर्तिपात्रलं
सुदीव्य० तत्सर० ॥ ४ ॥

विवाद आदधत्स्वलेखनीं मनीषिमण्डलं
यथात्रलो महात्रलो रणे हि मल्लसह दलंम् ।
यदन्तरे स्मरत्यहो सुनृपुराऽनुरागेलं
वृणोमि तत्सर० ॥ ५ ॥

भृशं निजानतोत्तमाङ्गसंगताऽचलातलं
श्रुताम्बुधिं महागुरुं स्वकीयशिष्ययूथलम् ।

९ भुक्ताऽनुभूता झलञ्जला करिकर्णास्फालो येन तत्सरोजम् ।
८ (यथा दुधात् तथा भूते धारणं पोषं च योऽनुमीश्वरं समर्थं यत् ।
१० स्वकीर्तिपाठश्चतुर्थम् * स्तुतिः । १० दलं सौरम् । ११ नृपुराणा
वत् ।

विशेषपद्मभीष्मिन् यदुज्जितान्जिनोदलं

नुवामि तत्सर० ॥ ६ ॥

नम सुगसुरोत्तमाङ्गमाल्यपुष्पगन्धलं

मदाऽविवेकदारुणं च यमदाहस्यज्वलम् ।

मनोव्यथाविमञ्जनं प्रतिलसन्धलं पलं

व्यनञ्मि तत्सर० ॥ ७ ॥

दिशन्मनोहरं सुशोभमेदिनीरुहः फलं

विशदकाल आनमक्तये ददन्महाबलम् ।

सुखप्रदानकारणं सुखान्निभागदम्भलं

मनुष्य तत्सर० ॥ ८ ॥

प्रणामभाजनं सर्वा प्रमोदकं महा ज्वलं

मदाऽविवेकसुतमोविनाशनाथ वीर्यलम् ।

नखेन्दुमण्डलं विभाति यत्र कान्तिमारलं

पुनानु तत्सर० ॥ ९ ॥

निषेचनेऽत्र यो नु मां निजान्नगन्धनोल्लस-

न्निवापयामि नभ्य मा उमाख्ये शुचावहम् ।

श्रीभ्रातृचन्द्रान्न विभेति भाकैः ॥ ५ ॥

तृप्यन्ति संपूर्णकलाधरस्य

काप्रसारातिमनोहरस्य ।

सुधोचकोरा अमृतेर्वरस्य

श्रीभ्रातृचन्द्रस्य वचोभिरस्य ॥ ६ ॥

उल्लसमुच्चैर्जगतो निरन्तरं

यः सागरस्याऽपि करोति भूरिशः ।

सत्कौमुदीभावनभूपिते प्रिये

श्रीभ्रातृचन्द्रेऽत्र रुचिः प्रवर्द्धताम् ॥ ७ ॥

भूरिशास्त्रमहासमुद्रससारमन्थनमन्दर !

काममत्तगजावमूलनकेसरिन् ! गुणमन्दिर !

भ्रातृचन्द्र ! सुचन्द्रकीर्त्तिवितान ! साधुशिरोमणे !

चन्द्रगौर ! जिनाद्विपङ्कज ! भृङ्ग ! नन्द सुखप्रद ॥ ८ ॥

श्रीमद्भगवतीलाल-विद्याभूषणसेविना ।

रचितः प्रमोदोद्गारो नित्यानन्देन शास्त्रिणा ॥ ९ ॥

इति श्रीनित्यानन्दशास्त्रिरचितः प्रमोदोद्गारः समाप्तः

इति शम् ॥

१ सान्तरुणात् । २ शोभाकरः । ३ 'जगच्चन्द्र' इति शिष्यनामाऽपि । ४ 'सागरचन्द्र' इति शिष्यनामापि । ५ सिद्धान्तकौमुद्यादि-
६ हरनर्तन वृत्तम् ॥

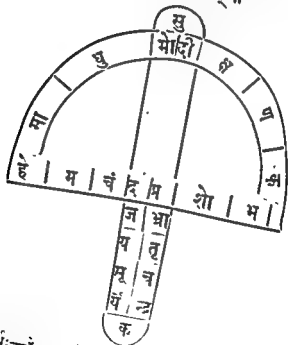
॥ छत्रनिवेदनम् ॥

॥ अनुष्टुप् ॥

हे साधुमोदीक्षणक हेमचंद्र प्रशोभक ।

सुमोद जय सूर्येक सुदीप भ्रातृचन्द्रक ॥ १ ॥

॥ छत्रबन्धचित्रम् ॥



अर्थः—हे साधुओं के, भ्रान्तदृष्टाएव नेत्रवाले ! सुवर्ग,
चन्द्रके जैसी शोभावाले, अन्धे एवंवाले, तेजस्वी, भ्रातापामे मुख्यः
भ्रातृचन्द्रजी ! आपकी जय हो ॥ १ ॥

सद्गुरुस्तुति ॥

श्रीपार्श्वजिणंद प्रणाम करी । श्रीगुरुगुण गाशुं
हर्ष धरी ॥ गुरु सूरि शिरोमणी सुखकारी
जिनशासनमां मंगलकारी ॥ १ ॥

बालकपण्थी गुरु ब्रह्मचारी । महाव्रतधारि भरि
उपकारी ॥ जंगमतीरथ वर जयकारी
गुरु भ्रातृचंद्र शुद्धाचारी ॥ २ ॥

आगम ग्रन्थोना भंडारी । समतासागर
महासुविचारी ॥ श्रीसहजकलानिधि गुणवंता
जस नाम सुणी हरषे संता ॥ ३ ॥

मांघ्रन कालें गुरुजी दीपे । महा सौम्य गुणे
शशिने जीपे ॥ महु भटारक मांहि शिरोमणी
गुरु भिक्षुनाममहानभोमणी ॥ ४ ॥

गुरु रूपे मदन हरादरो छे । गुरु ज्ञाने शंभु
नवदयो छे । गुरु वासिजांपक पद पायो
गुरु भाविजनना मनमां भायो ॥ ५ ॥

गुरु गुणानुकर ॥ गुरु देजे । गुरु विनो भविजन

उपदेशे ॥ श्वेतांबर वेशे गुरुजी दीसे
 गुरु गुणगुण छे विश्वा वीशे ॥ ६ ॥
 अहोनिश श्रीगुरुजीने भाजिये । तो भवना भयने
 दूर तजिये ॥ गुरु नामे दुःखउदधि तरिये
 गुरु नामे जय मंगल बरिये ॥ ७ ॥
 गुरु नामे नवनिधि अड सिद्धि । गुरु नामधी
 ज्ञानादिक वृद्धि ॥ मनवंचित धर्मारथ शुद्धि
 गुरु नामे मले शाश्वत ऋद्धि ॥ ८ ॥
 गुरु नामे संतति सुखदाई । गुरु नामे लच्छि
 आवे धाई ॥

गुरु नामनी महिमा बहु भाई
 गुरु नामे टले मति दुखदाई ॥ ९ ॥
 भवि ध्यान विषे गुरुने ध्यावो । वंचित दायक
 घटमां लावो ॥ मुनि सागरचंद्र कहे गावो
 गुरु गुण गातां शिव सुख पावो ॥ १० ॥

जैनाचार्यो ऽर्धावित्स्वामी भ्रातृचन्द्रो जगद्गुरुः ॥
 इत्थं स्तुतो मुनि श्रेष्ठो विक्रमाग्रे पुरे ऽदिभना ॥१॥
 इति श्री महाभक्तियोगे मया समाप्तम् ।

। अथ श्री सद्गुरु स्तवन । प्रथम जिणेकर प्रणमीये, ए देवी ।
 प्रेमे प्रणमुं ग्रह समे, श्रीसद्गुरुजीना पाय;
 भ्रातृचन्द्रसूरिराजनां चरणो घांदतां पातिक दूर

पलाय प्रेमे० ॥ १ ॥

युगप्राधान्य योगीश्वरु, सांप्रतमां मुनिराज ॥
 श्रीमन्नागपुरीयवृहत्तपगच्छमां, दीपे राजाधिराज ॥
 प्रेमे० ॥ २ ॥

भव्याकृति अति शान्तता, स्वस्वभावमां लीन ॥
 परपरिणति परभाव परांमुख गुरु तणा,
 भवि थाओ चरणे आधीन ॥ प्रेमे० ॥ ३ ॥
 सूरि गुणो सह शोभता, भविचकोरमनचंद्र ॥
 विद्यान्यायसमुद्र गुरु गुण प्रेमर्था
 गाओ सागरचंद्र ॥ प्रेमे० ॥ ४ ॥

इति श्री स्तवनम् ॥

(सारं सारं गुरुन गृहे—ए देवी.)

शोभा शी वर्णतुं आज धन्य दिन धन्य घडी,
 गुरु भ्रातृचंद्र सुपसाय वरसे आनंद झडी,
 ध्वजा पताका तोरण वावटा,
 गेयी नाद संभळायरे;

मंगल वाजां वागी रक्षां ज्यां,
मानुनी मंगल गाय.

धन्य. शोभा.

संवत ओगणीसे अडसठ शुदी,
तेरस वेशाख मासरे;
सूरीपदवी गुरु भ्रातृचंद्रे ग्रही,
वाप्यो हृदय हुडास.

धन्य. शोभा. २

बृद्ध बाल नरनारी सर्वने,
हंडे हर्ष न मायरे;

आनंददायक अधिक आजनो,
दिवस कदी न भुलाय.

धन्य. शोभा. ३

पंचम आरे सद्गुरु आवा,

मलतां लागे वाररे;

पूरण पुण्यथी मलिया वाकी,
वंटीना बे वार.

धन्य. शोभा. ४

सैनप विण कदि सैन्य न शोभे.

शिखर वगर मंदिररे;

दया विनानां धर्म न शांभे.

जीव विनानुं शगीर.

धन्य. शोभा. ५

डोल निशान मृदंग झांझ वली,
 झालरो झणणण थायरे;
 पन्यास श्री हेतविजयजी हाथे,
 सूरीपद किरिया कराय. धन्य. शोभा. ६
 क्रिया तणो किल्लो करी लीधो,
 ज्ञान तणा दरवाजारे;
 धर्मध्वजा गगने फरकी रही,
 गुरु राजाना राजा. धन्य. शोभा. ७
 देश देशना संघो आवी,
 ठमंगे भावना भावेरे;
 गर्व रहित गिरुवा गुरुना गुण,
 भाईलाल मुख गावे. धन्य. शोभा. ८

श्री जैनधर्माचार्य श्रीमन् मुनिवर्य श्री १००८
 भ्रातृचंद्रजी महाराजने आचार्य पद मलतां प्रांत कच्छ
 गाम श्रीदुर्गापुरनी पामुभाई वाघजी जैन पाठशा-
 लाना अध्यापक अमृतलाल मगनलाले प्रस्तुत
 महोत्सवने अंगे समर्पित कविता कुसुमांजली.

(અર્થ મનહર છંદ)

ઉગ્યો આજે આચાર્યોનો ભ્રાતૃચંદ્રસૂરિ ભાનુ
જયવંત જૈનહીરો શોભ્યો રુડા સંઘમાં,
પથી અતિ આનંદનો અવસર આવ્યો આજે
સુળી શિવગંજ સ્થાને જવાનું ઉમંગમાં;

કલ્યાણ.

જય વિશ્વના પતિ દે શુભગ ઉન્નાતિ । સુરિન્દ્ર પદ પ્રહે
છે આજભ્રાતૃચન્દ્રજી.

મહોત્સવ છે આ ભરતભૂમિના, શિવગંજ મોક્ષાર;
મુનિદર્શનને માટે મલિયા, શ્રાવક ધરીને પ્યાર. વિ.
નાગપુરિ તપગચ્છ પતિધી, પાર્શ્વચંદ્ર સૂરિરાજ;
પરંપરામાં હેમચંદ્રસૂરિ, અર્પેલું પદ આજ. વિ.
સકલ સંઘમાં આજે આનંદ, ઘટે જય જયકાર;
જૈનમુનિમાં ભ્રાતૃચંદ્રજી, પામ્યા પદવી સાર. વિ.
સૂરિપદ પામ્યા પથી અધિકો, આનંદ ઘાપ્યો આજ;
જૈનસંઘમાં જોત પ્રક શી, દીપ્યો જૈનસમાજ. વિ.
દોષચંદ્રમુની સુળી સ્વર આ. દે છે વિમલ વપાઈ;
દુર્ગાપુરના સકલ શ્રાવકો. મુળી વચનો હરચાપ. વિ.
તાધુ શ્રાવકો સર્વ મલ્લિને. પાલે આનંદ આજ:

પંડિત ઘરોં આનંદ માને, ગાર્હ ગુણો મુનિરાજ. વિ.
 ભરતચંદ છે મહ્ય પુરાતન, જગમાં ઉત્તમ દેશ;
 ઉન્નતિ પામે સૂરિ ચોધર્યા, અમૃત ન ઉદેશ. વિ.

“ જોયું જ્યારથી પ્રા મૃત ” ને દયની સાવગી.

આજે આનંદ અપાર મલ્યો સકલ સમાજ
 અહા ! આનંદ મન છે ગ્વરો પ્રસંગ. આ.

મલ્યા છુશ ગ્વર આજ પામ્યા પદ મુનિરાજ;
 મુનિ ભ્રાતૃચંદ્રરાજ થયા સૂરિ મહારાજ. આ.

શુભ શિવાંગ સ્થાન સૂરિ હેમચંદ્રે માન;
 અપ્યું અતિ સન્માન માન ધારી વિદાન. આ.

સહુ મુનિઓનો સ્વાસ આથી વધ્યો છે હુલાસ;
 કરી વિદ્યા પ્રકાશ પછી પામો સહુ. આ.

પહોચો ઉન્નતિને દ્વાર કરી દ્રેપનો સંહાર;
 પછી પડો સહુ વહાર પામી ઉત્તમ પદ. આ.

છે અમૃત મન આ શાંતિનો પ્રસંગ;
 તજી આલસ્ય અંગ કરો દેહઉદ્ધાર. આ.

दुर्धाम गुणगण युक्त मृगि चरण मुनिपि अंशं
 भवि भक्तिभावे नमो निशिदिन प्रातृचंदमूर्ति
 जिन भाण अन्न धनां मृगेश्वर ज्ञान दीप
 मिथ्यांधकार विकार शब्दा नविक जल प्रदीप
 शुभ छंद सांकल्यचंद कहं पावन हरी
 भवि भक्तिभावे नमो निशिदिन प्रातृचंदमूर्ति



गग मारंग.

ओ माहेंवरी नेक जग करी माय संसारवे साहेब

आज आनंद भयो मृगिपद

गुरु, भ्रानृचंद्रजी म्यांकारे.

पुण्य उदय भयो भेटपा मृगेश्वर

भावे दृग्नि निवार.

देव

आज आनंद अमृतपन वाग्वा

आज जिनशासन देवो हरषवा.

आज मृगिपद भ्रानृचंद्र करषवा.

आज

श्रीनागपुरीय सभाजन आमु,

मुनिशिर मृगि वाग्वाचंद्र माने.

हम वंदेवम देममृगि आन

आज

- उग्यो सोनानो सूरज आजे,
 आज अमृतना घन गाजे;
 आज मंगळ वाजित्रो वाजे. दिवस० १
- नागपुरी वडतप गच्छ गाजे,
 पाट हेमसूरिने छाजे,
 आज भ्रातृचंद्रजी बिराजे. दिवस० २
- सुविहित निग्रंथ सूरिदा,
 थया पार्श्वचंद्र मनिइंदा,
 कीधो किरियोद्धार सूरिदा. दिवस० ३
- तस पाटे सूरि बहु त्यागी,
 निग्रंथ थया निरागी,
 ज्ञान ध्यानथी शुभ लय लागी. दिवस० ४
- पछी निज गुरु भक्ति कीधी,
 छडी छत्र ने पालखी दीधी,
 जगतशेठे साबाशी लीधी. दिवस० ५
- आज सूरिपद निग्रंथ त्यागी,
 घेठा भ्रातृचंद्र वडभागी,
 आज पूर्व पुण्यकृति जागी. दिवस० ६

સુરિ શાંતિ દાંતિ ગુણદારિયા,
 ધુમજ્ઞાન ધ્યાન અનુસારિયા.
 દુઃખીન ગુણગણધી ભરિયા.
 જંગમતરિધ સુગદાના,
 નિષ્પત્તારણ ધંધુ ગ્રાતા,
 ભવિજનને સુધર્મના દાતા.
 સમતા સાગરગુરુતાપા,
 નાદિ મોહ વોહ ને માયા,
 ધંધન ધરણી જસ ધાયા.
 ગુરુ ધર્મધુરંધર ધોરી,
 નિમંથ ન પાસે વોરી,
 ગણી દુનિયાં દિવાની છોરી.
 ભવિ નર નાગી ઉદ્ધરજો,
 સાંકળ્લચંદનાં દુગ્ધટાં હરજો,
 સુગીશ્વર ભવિભવભય હરજો.

દિવસ ૦ ૭

દિવસ ૦ ૮

દિવસ ૦ ૯

દિવસ ૦ ૧૦

દિવસ ૦ ૧૧

श्रीमान् आचार्य महाराज श्री श्री १००८
 श्रीभ्रातृचंद्र सूरेश्वरजीना राजनगर प्रवेश
 समये गवायेलां मंगल गीत.

—ॐ नमः शिवाय—

१

(चालो साहेली (२) सुवनेशरीना)—ए राग.

चालो गुरुजी चालो गुरुजी चरणकमळधी

राजनगर पावन करीए;

अति उछरंगे चढते रंगे भवसागरधी

भवि नरनारी उद्धरीए.

जनमनरंजन जिनवचनामृत

पंधुविधु मुखधी झरीए;

बोधिबीज देई भविजन मनना

त्रिविध ताप पापज हरीए,

समतासागरमांथी गुरुजी सज्जन

मन गागर भरीए.

चालो गुरुजी० १

सुविहित गुणदारियो गीतारथ

भ्रातृचंद्र सूरिराज मळ्यो;

यशो मुरतरु फळियो मरुधरमां

गुजरभूर्मांमां आज्ञा फळ्यो.

गुरु वचनान्मृत फल सांकळचंद
संघ सकळ चारखे सवळो. चालो गुरुजी० २

(मालण गुंथी लाव गुणीयल गजरो) — १ राग.

साहेली जोवा चाल्य गुरुजी पधार्या,
जेणे राग ने द्वेप निवार्या.

आज भ्रातृचंद्रसूरिराया, आज राजनगरमां सुहाया;
करी सामेयुं संघे वधाच्या.

आज धन्य दिन धन्य घडी वेळ्या, महा मंगळ रेलंरेला;
धया मनवांछित गुरु मेळ्या.

आज पूरवना पुण्य जाग्या, आज बैरी अनादिना भाग्या;
आज मे' वर्या म्हो गाग्या.

व्हेनी मोतीना साधिया पूरो, करी गुंढली चौगति चूरो;
गुरुभक्तिलो उग्यो अंकुरो.

छत्रीस गुणगण सूरिराया, भवरणमां शीतळ छाया;
छत्रीस मोह कोह ने माया.

गुरुगुण गंगाजळ झेली, सींचीए गुणवाडी साहेली;
वधे समकित वृक्षनी वेली.

एवा शांत दांत मृगीराया. भजी पावन करीए काया;
गुण सांकळचंदे गाया.

साहेली जोवा० १
साहेली जोवा० २
साहेली जोवा० ३
साहेली जोवा० ४
साहेली जोवा० ५
साहेली जोवा० ६
साहेली जोवा० ७
साहेली जोवा० ८

श्रीमान् आचार्य महाराज श्री श्री १००८
 श्रीभ्रातृचंद्र सूरेश्वरजीना राजनगर प्रवेश
 समये गवायेलां मंगल गीत.

- <६१३:०:६०३> -

१

(चालो साहेली (२) सुवनेश्वरीना)—ए राग,
 चालो गुरुजी चालो गुरुजी चरणकमळथी
 राजनगर पावन करीए;
 अति उछरंगे चढते रंगे भवसागरथी
 भवि नरनारी उद्धरीए.
 जनमनरंजन जिनवचनामृत
 घंधुविधु मुखथी झरीए;
 बोधिवीज देई भविजन मनना
 त्रिविध ताप पापज हरीए,
 समतासागरमांथी गुरुजी सज्जन
 मन गागर भरीए. चालो गुरुजी० १
 सुविहित गुणदारियो गीतारथ
 भ्रातृचंद्र सूरिराज मळ्यो;
 कथा सुरतरु फळियो मरुधरमां
 गुर्जरभूमीमां आज फळ्यो.

गुरु यचनामृत फल सांकलचंद
संघ सकल पाखे सबळो. चालो गुरुजी०

२

(माणण गुपी लाव गुणीपळ गजरो)—ए राग.

साहेली जोया चाल्य गुरुजी पधार्या,
जेणे राग ने द्वेप निवार्या.

आज भ्रातृचंद्रसूरिराया, आज राजनगरमां सुहाया;
फरी मामेयुं संघे यधाव्या.

साहेली जोवा० १

आज धन्य दिन धन्य घडी वेष्टा, महा मंगळ रेलंरेला;
थया मनवांछिन गुरु मेष्टा.

साहेली जोवा० २

आज पूरवना पुण्य जाग्या, आज बेरी अनादिना भाग्या;
आज मे' वप्यां ग्दो गाग्या.

साहेली जोवा० ३

घेनी मोतीना साधिया पूरो, करी गुंढली चौगति चूरो;
गुरुभक्तिनो उग्यो अंकुरो.

साहेली जोवा० ४

छत्रीस गुणगण सूरिराया, भवरणमां शीतळ छाया;
नदीं मोद कोद ने माया.

साहेली जोवा० ५

गुरुगुण गंगाजळ झेली, सींचीए गुणवाडी साहेली;
ववे समकित वृक्षनी वेली.

साहेली जोवा० ६

एवा शांत दांत सूरिराया, भजी पावन करीए काया;
गुण मांकळचंदे गाया.

साहेली जोवा० ७

साहेली जोवा० ८

सुगुरुस्तुतिरूप " स्वागत पत्रिका. "

(वसंततिलकावृत्त)

शांती सुधाकर सदा समताविलासी ।

आनंद मंगल प्रभाकर तेजराशी ॥

गांभीर्य गौरव मुखेन्दु रत्ना प्रकाशी ।

प्रेमे पधारो गुरु आगम तत्त्वभाषी ॥ १ ॥

वर्षावजो सु उपदेश विशुद्ध धारा ।

विस्तारजो अचळ शांति सु वाणीद्वारा ॥

ऊद्धारजो भविक ज्ञानप्रभाविकासी प्रेमे० ॥२॥

उडे अमीत उर आनंदना फुवारा ।

पाग्या पुनीत गुरुदर्शन दिव्यमाळा ॥

आ भक्त अंतर निरंतर रहो निवासी प्रेमे० ॥३॥

आ गुर्जरभूमि पवित्र करी प्रवेशो ।

मेदी उंडा हृदयना तिमिर प्रदेशो ॥

आनंद मंगल उपा उरमां प्रकाशी प्रेमे० ॥४॥

श्रीभ्रातृचंद्र मुखचंद्र श्री ज्ञानचंद्र ।

भावे नमे भाविक भक्त चक्रोरुचंद्र ॥

आ "दक्ष" अज्ञ उर ज्ञानि गुरु प्रकाशी प्रेमे० ॥५॥

भावो भावो ज्ञानोदना पंग अम घेर भावोरे—ए राग.
 आजे शांत दांत सुखदाता गुरुजी पधारैरे,
 वर्षावे आनंदमेघ वाणी अमिधारैरे. आजे० १
 उग्यो अधिचळ आनंद भानु उर अजवाळैरे;
 पधारो संत महंत श्री अम उर दारैरे. आजे० २
 सूरेश्वर सुरतरु छांये भविजन रमतांरे;
 प्रगट्युं अम पुन्य प्रभान गुरुजीने नमतांरे. आजे० ३
 धरि पंचमहाव्रत मोहस्पि संहारैरे;
 शुभ पदवी धुरंधर धर्माचार्यनी धारैरे. आजे० ४
 भावि अंतर कुमुदचंद्र नमे भविचंद्रैरे;
 भवभीरु गुरु श्री सूरेश्वर भ्रातृचंद्रैरे. आजे० ५
 ज्योति जैनधर्मनी देश विदेश विस्तारीरे;
 करे पावन राजनगर गुरु चन्द्र पधारीरे. आजे० ६
 शांतिकर स्वातिमेघ गुरु अमि वागीरे;
 याचे भवि चातकचंद्र सु देशनापार्णीरे. आजे० ७
 समतासागर गुरुताज श्री संवेग संगीरे.
 विदारता कुमति कुटिल सुमति संगीरे. आजे० ८

रची काज्यना पात्रे घरे उर भावना मोतीरे;
 वधावतां गुरुजी प्रगटे आनंद ज्योतिरे. आजे० १.
 उद्धारजो भविजन वृंद पळ्या माया फंदेरे;
 उतारे आरती "दस" सु आनंद छंदेरे. आजे० १०

जिन राजा ताजा, मडी बिराजो घोंगरी गावनां—ए राग.

मुनी संजम रागी, भले पवारो शुभ शहेरमां,
 राजनगर आ जैन धरमनुं, शहेर बहुं शिराज;
 भ्रातृचंद्रमूरी भले पवार्या, आनंदनो दिन आजर. मु.१
 ममता श्रद्धा शांति शरीरे, ममता नही मन दीसे;
 शास्त्र सिद्धांते तत्त्व विचारी, सत्य वचन उपदेशेरे. मु.२
 पंच महाव्रत गुगना दरिआ, अष्ट करम हणनारा;
 उत्तम बोधी अमृत ज्ञानी, सद्गुरु अमने प्यारोरे. मु.३
 अधम उधारण आत्मव्यानी, आत्मना अलवेली;
 कर जोडीने करुं वीनती, अरज स्वीकारो व्हेलारे. मु.४
 राजनगरना श्रावक आवी, वीनती करो पवरावे;
 महेर करोने महा मुनिराया, मभा मरस्वती गावेरे. मु.५

સૂરીશ્વર શ્રીમાન્ ભ્રાતૃચંદ્રાચાર્યના પુર
પ્રવેશ સમયે સામૈયાનું તથા
નગરના દેશાવનું વર્ણન.

સારું સારું રે મુરત સહેર મુંવાદ મનચેલી.—૫ રાગ.

દિન સફળ ઘડી પઠ્ઠ આજ, ગુરુજી પવાર્પા છે:
આજ પુરપ્રવેશ સૂરિરાજ, કાજ સુવાર્પા છે.—ટેક.

ભ્રાતૃચંદ્ર સૂરિરાજ પવાર્પા, આનંદ વાઝગોપાઝો;
રાજનગરમાં આજ દોવાઝી, ઘર ઘર મંગલપાઝ. ગુ. ૧

ઘર ઘર તરીયાંતોરગ શોમે, ઝૂંડે પ્વજ આકાશોરે;
વિવ વિવ મુક્તકઠ્ઠની શ્રેર્ગી, માનુંં જ્યોતિ પ્રકાશ.ગુ. ૨

ઘમ ઘમ મંડવની રચના, જાગે દેવવિમાનરે;
મામૈયું કરી અતિ ઉછરંગે, મંવે કર્યુ મન્માન. ગુ. ૩

વાજાં વાજે અંકર ગાજે, નોવન ને નિશાનરે;
અલવેલા શાવેલા હય પર, ચઢિયા દેવસમાન. ગુ. ૪

આજ પ્રભાતે પ્રમા સૂરિની, સૂરયો સ્વર્ગ કરનોરે;
વિંતે માનુ હું નમવામી. આ સૂર ઉગ્યો ધરનો. ગુ. ૫

ગુરુપુત્ર જોતી વવાવની મોતી. વાઝા ગુણ મગીમાઝોરે;
માજન મહાજન ચાણે માયે. મંગલ વોલે વાઝ. ગુ. ૬

રાજહંમ મૂર્તિશ્વર અપ્રમર. જ્ઞાન પ્યાનમાં મહાજેર;
ઉપયોગે પદકજથી ભૂતઝ, પાવન કરના પાંચ

राजमार्ग संकिर्ण थया बहु, मळया लोकना थोकरे;
 गुरुमुख जोवा जन वेइ चढिया, माळ अगरी गोख. गु.
 आज महोदय सफळ मनोरथ, पुखनां पुण्य जाग्यांरे;
 शामळानी पोळे गुरु आव्या, पापमेवाशी भाग्या. गु.
 तत्ववीणा गुणज्ञाननी वागी, भारतभूमि निरधाररे;
 शांत सुधारस धर्मदेशना, सुणे भविक नरनार. गु. १०
 गुरुगुण गंगाजळने झेली, सींचो भवि गुणवाडीरे;
 अनुभव पुण्य खिले उर जामे, समकित सुरतरु दांडी. गु. ११
 मुकुटमणी श्री संघ तिलक गुरु, सभा सरस्वती ताजरे;
 मंत्र समुद्रमां संपनी भरती, भरज्यो कलानिधि आज. गु. १२
 विनय विवेक ने विद्या वधशे, श्रद्धा ने समकीतरे;
 कलेश कुसंप जशे जड मूळथी, जशे रोग इन भीत. गु. १३
 मदगुरुराज प्रभावे थाशे, संघमां मङ्गळमाळरे;
 संप जंप स्मृद्धि सांकळचंद, थाशे लीला विशाळ. गु. १४

भ्राजिष्णुं मविनां हिताय भुवने नित्यं चरिष्णुं मुदा
 तृष्णातीत विनीत वीत विविध क्लेशं जयिष्णुं मृशमा
 चंद्रभोज्यं विद्वहं यतिवत् मद्बोध दिष्णुत्तमं
 दृश्यं नित्यं यथान्तमननं श्रीभ्रातृचन्द्रं भजे ॥

